



ISBN: 978-81-23010-01-6

पुस्तक का नाम
बेटी के नाम कंठस्थ पत्र

लेखक
डॉ. सुरेश कुमार मिश्रा 'उरतृप्त'
© लेखक

प्रकाशक:
संकल्प प्रकाशन

वर्ष 2015

मुद्रक:
साक्षी ऑफसेट, कानपुर

बेटी के नाम कंठस्थ पत्र

डॉ. सुरेश कुमार मिश्रा 'उरतृप्त'

BETI KE NAAM KANTHASTH PATRA

By: Dr. Suresh Kumar Mishra 'Uratript' Price: 60/-



जे डपीएचएस मल्लापुर का नौवीं
'बी' सेक्शन। धूप खिली हुई थी
और क्लास में एक हल्की-सी
खामोशी थी, जो किताबों के पन्नों के
पलटने की आवाज़ से टूट रही थी।



बेंचों पर बैठे बच्चों के बीच, एक लड़की थी जिसका नाम नुसरत परवीन था। वह 14 साल की थी और उसकी सुंदरता में एक भोली-भाली शांति थी, जैसे सुबह की पहली किरण।



नुसरत बहुत कम बोलती थी। एक शांत झील की तरह, जिसके नीचे गहरा पानी हो। न वह सवाल पूछती थी, न किसी चर्चा में हिस्सा लेती थी। बस बैठती थी, सुनती थी, और सीखती थी।



हिंदी अध्यापक, डॉ.
सुरेश कुमार मिश्रा
'उरतृप्त', अपनी क्लास
को बड़े ध्यान से देखते थे।
वह शर्ट और जींस पहने,
आधुनिक विचारों के साथ
परंपरा का पुल थे।



'उरतृप्त' सर नुसरत को लगभग नज़रअंदाज़ ही कर देते थे। "शांत बच्चे... ठीक है, मगर सीखने में पीछे न रह जाँँ," वह कभी-कभी सोचते थे। उन्हें लगता था कि उसका शांत स्वभाव कहीं उसकी सीखने की गति को धीमा न कर दे।



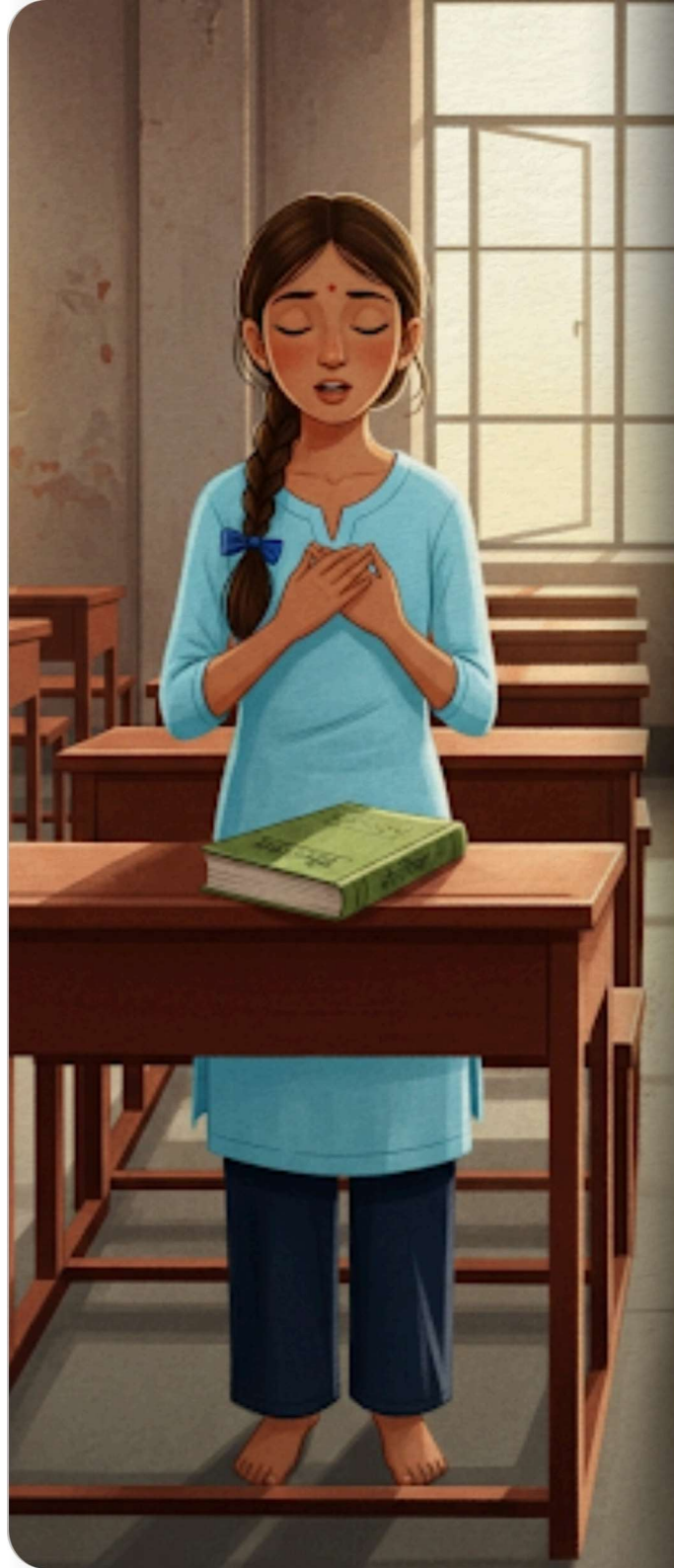
आज पाठ छठा शुरू
होना था: महान नेता
जवाहरलाल नेहरू द्वारा
अपनी बेटी इंदिरा को
लिखा गया पत्र, 'बेटी के
नाम पत्र'। यह पाठ दो
पत्रों का था, गंभीर और
भावुक।



सर ने कहा, "कौन पढ़ेगा
आज का पाठ? पूरी कक्षा
को सुनाओ।" उन्होंने
बारी-बारी से बच्चों के
चेहरों को देखा। कोई
हाथ ऊपर नहीं उठा।
सब संकोच कर रहे थे।



तभी, एक कोमल, धीमी
आवाज़ उठी। "सर, मैं
पढ़ूँगी।" यह नुसरत
परवीन थी। सर ने थोड़ा
चकित होकर उसे देखा।
"हाँ, नुसरत। शुरू करो,"
उन्होंने कहा।



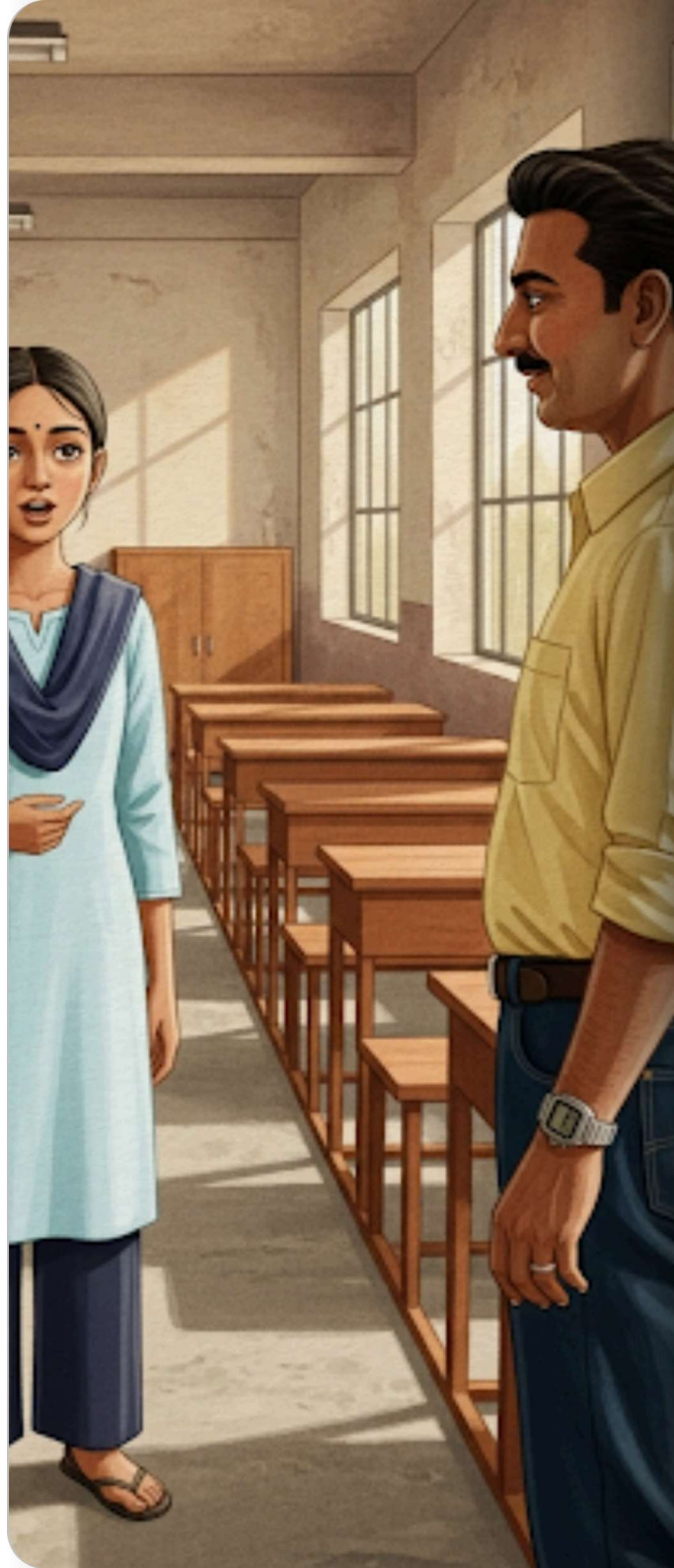
नुसरत खड़ी हुई। लेकिन
उसने किताब नहीं
उठाई। उसने अपनी
आँखें बंद कीं और उसने
पढ़ना शुरू किया, बिना
किताब देखे। "जब तुम्हें
यह पत्र मिलेगा..."



उसकी आवाज़, जो अब
तक शांत थी, अचानक
मधुर और स्पष्ट हो गई।
जैसे किसी छिपी हुई नदी
ने अपना रास्ता खोज
लिया हो। पाठ के शब्द
बिना रुके, बिना
हिचकिचाहट के निकलते
गए।



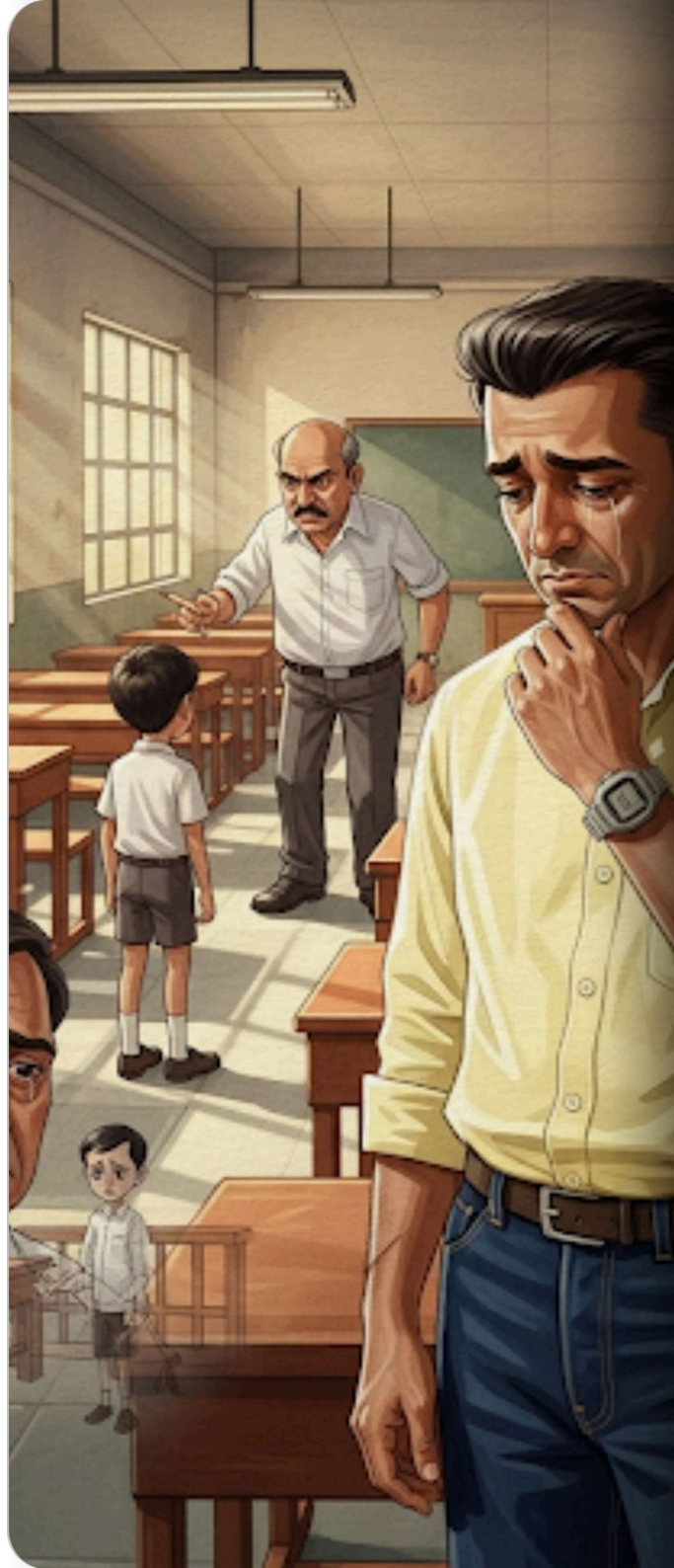
एक मिनट... दो मिनट...
नुसरत ने पहले पन्ने का
हर शब्द, हर भावना, याद
से सुना दिया। कक्षा में
सन्नाटा छा गया था। हर
आँख नुसरत पर टिकी
थी।



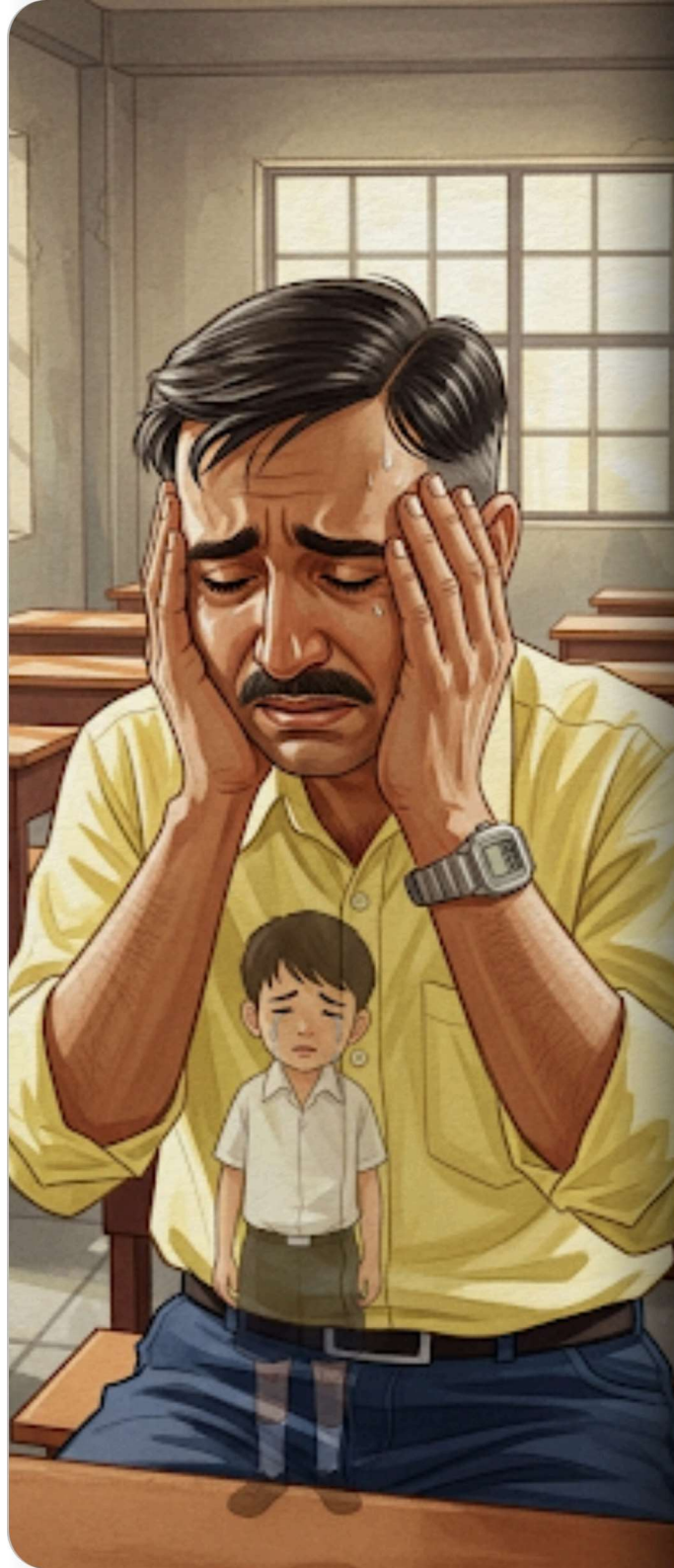
और फिर, दूसरे पन्ने के
गंभीर शब्द: "तुम्हें मालूम
है, हिंदुस्तान का इतिहास
कितना पुराना है..."
नुसरत की आवाज़ में
नेहरू जी का प्रेम और
स्वतंत्रता का संघर्ष गूँज
रहा था।



दो पूरे पन्ने। एक
अल्पविराम की भी गलती
नहीं। जब नुसरत ने
आखिरी शब्द कहा और
अपनी आँखें खोलीं, तो
पूरी कक्षा और 'उरतृप्त'
सर स्तब्ध रह गए।



सर की आँखों के सामने
उनका अपना बचपन घूम
गया। वह कक्षा चौथी के
सुरेश थे, जिसे पढ़ना नहीं
आता था। उनके गुरुजी
उन पर हर रोज़ गुस्सा
करते थे, "क्यों रे सुरेश,
तुझे अ, आ भी याद नहीं
होता?"



उनके होंठ काँपते थे,
शब्द अटकते थे। वह डर
से पसीना-पसीना हो जाते
थे। उस दिन, उन्हें लगा
था कि वह कभी नहीं पढ़
पाएँगे। वह असफलता
का बोझ आज भी उनके
दिल में था।



नुसरत ने जो किया था,
वह केवल पढ़ना नहीं था;
वह एक शांत विजय थी।
वह विजय जो बचपन में
'उरतृप्त' सर को नहीं
मिली थी। उनके मन में
गर्व और ईर्ष्या का एक
अजीब मिश्रण उत्पन्न
हुआ।



उन्होंने नुसरत की ओर
देखा। उसकी भोली-
भाली आँखें, उसका शांत
आत्मविश्वास। यह लड़की
किसी महान चीज़ की
हकदार थी, केवल एक
'गुड' की नहीं।



सर ने अपनी जेब में हाथ
डाला और एक सौ रुपए
का नोट निकाला। पूरा
क्लास उन्हें देखता रहा।
यह सिर्फ पैसा नहीं था,
यह सम्मान था।



उन्होंने नोट नुसरत के
हाथ में रखा और
भावनाओं से भरा उनका
गला रुंध गया। वह बोले,
"यह सौ रुपए तुम्हारे आगे
कुछ भी नहीं है... तुम
इतना अच्छा पढ़ती हो कि
तुम्हारे ऊपर लाखों रुपए
खर्च कर भी दें तो कम
है।"



और फिर, खुशी और
अत्यधिक स्नेह में, उनका
जुबान फिसल गई।
उन्होंने कहा, "शाबास
सना बिटिया शाबाश। तुम
हमेशा ऐसे ही चमकती
रहो।" नुसरत ने सिर
झुकाकर सम्मान दिया,
उसके दिल में एक नई
रोशनी थी।



डॉ. सुरेश कुमार मिश्रा 'उत्तम' के बारे में



'उत्तम' उपनाम से ख्यल जगत में प्रसिद्ध डॉ. सुरेश कुमार मिश्रा अपनी भावनाओं और विचारों को अत्यंत ईमानदारी और गहराई से अभिव्यक्त करते हैं। उनकी बहुमुखी प्रतिभा का प्रमाण उनके लेखन के विभिन्न क्षेत्रों में उनके योगदान से मिलता है। वे न केवल एक प्रसिद्ध व्यंग्यकार हैं, बल्कि एक कवि और बाल साहित्य लेखक भी हैं। उनके ख्यल लेखन ने उन्हें एक विशेष पहचान दिलाई है। उनका ख्यल 'शिक्षक की मौत' साहित्य आवतक चैनल पर अत्यधिक वायरल हुआ, जिसे लगभग दस लाख से अधिक बार पढ़ा और देखा गया, जो हिंदी ख्यल के इतिहास में एक अभूतपूर्व कीर्तिमान है। उनका ख्यल-संग्रह एक तिनका इक्यावन आँखें भी काफी प्रसिद्ध है, जिसमें उनकी कालवयी रचना 'किताबों की अंतिम यात्रा' शामिल है। इसके अतिरिक्त 'म्यान एक, तलवार अनेक', 'गमोड़ी अड्डा', 'सब रंग में मेरे रंग' भी उनके प्रसिद्ध ख्यल संग्रह हैं। 'पुधर-उधर के बीच में' तीसरी दुनिया को लेकर लिखा गया अपनी तरह का पहला और अनोखा ख्यल उपन्यास है। साहित्य के क्षेत्र में उनके योगदान को तेलंगाना हिंदी अकादमी, तेलंगाना सरकार द्वारा ग्रेड नवयुवा रचनाकार सम्मान, 2021 (मुख्यमंत्री के. चंद्रशेखर राव के हाथों) से सम्मानित किया गया है। राजस्थान बाल साहित्य अकादमी के द्वारा उनकी बाल साहित्य पुस्तक 'नन्हों का सृजन आसमान' के लिए उन्हें सम्मानित किया गया है। इनके अलावा, उन्हें ख्यल यात्रा रवींद्रनाथ रघाणी सोपान सम्मान और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के हाथों साहित्य सृजन सम्मान भी प्राप्त हो चुका है। डॉ. उत्तम ने तेलंगाना सरकार के लिए प्राथमिक स्कूल, कॉलेज और विश्वविद्यालय स्तर पर कुल 55 पुस्तकों को लिखने, संगठन करने और समन्वय करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। बिहार, छत्तीसगढ़, तेलंगाना की विश्वविद्यालयी पाठ्य पुस्तकों में उनके योगदान को रेखांकित किया गया है। कई पाठ्यक्रमों में उनकी ख्यल रचनाओं को स्थान दिया गया है। उनका यह सम्मान दर्शाता है कि युवा पाठक गुणवत्तापूर्ण और प्रभावी लेखन की पहचान कर सकते हैं।